B.A. (Part-III) Examination, 2019

हिन्दी साहित्य-तृतीय वर्ष (प्रथम प्रश्न पत्र)

(आधुनिक काव्य)

For Collegiate Candidates

Time allowed : Three Hours — Maximum marks : 100

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी। अत: परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर लिखें।

किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) जाते-जाते अगर पथ में क्लान्त कोई दिखावे। 10
तो तू जा के निकट उसकी क्लान्तियों को मिटाना।
धीरे-धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।
सद्‌गन्धों से श्रमित जन को हर्षितों सा बनाना।
सलॅग्ना हो सुखद जल के श्रान्तिहारी कणों से।
लेके नाना कुसुम कुल का गन्ध आमोदकारी।
निर्धूली हो गमन करना उद्धता भी न होना।
आते-जाते पथिक जिससे शान्ति पावें।

अथवा

दोनों ओर प्रेम पलता है। 10
सखि पतंग भी जलता है हा! दीपक भी जलता है।
सीस हिलाकर दीपक कहता-
'बन्धु!' वृथा ही तू क्यों दहता?
पर पतंग पड़कर ही रहता!
कितनी विह्वलता है।
दोनों ओर प्रेम पलता।

(ख) पहेली सा जीवन है व्यस्त 10
उसे सुलझाने का अभिमान
बताता है विस्मृति का मार्ग
चल रहा हूँ बनकर अनजान।
भूलता ही जाता दिन-रात
सजल अभिलाषा कलित अतीत,
बढ़ रहा तिमिर गर्भ में नित्य

StudentSuvidha.com
downloaded from

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

दीन जीवन का यह संगीत।

अथवा

द्रुत झरो जगत् के जीर्ण पत्र। 10
हे स्त्रस्त-ध्वस्त! हे शुस्क शीर्ण।
हिम-ताप-पीत, मधु-वात-भीत
तुम वीतराग, जड़, पुराचीन।
निस्प्राण विगत-युग! मृत विहंग।
जग-नीड़ शब्द औ' श्वास-हीन,
च्युत, अस्त-व्यस्त पंखों से तुम
झर-झर अनन्त में हो विलीन।

(ग) यह दीप अकेला स्नेह-भरा 10
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।
यह जन है-गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गाएगा?
पनडुब्बा-ये मोती सच्चे फिर कौन कृती लाएगा?
यह समिधा-ऐसी आग हठीला बिरला सुलगाएगा।
यह अद्वितीय-यह मेरा-यह मैं स्वयं विसर्जित-
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर
उसको भी पंक्ति को दे दो।

अथवा

वह ज्ञान-लिप्सा, क्षितिज-सपना 10
रे, वही तुझमें अनेकों स्वप्न देगा
औं' अनेकों सत्य के शिशु
नव हृदय के गर्भ में द्रुत
आ चलेंगे।
आत्मा मेरी-
उस ज्वलन की भूमि में तू स्वयं बिछ ले
देख, जलते स्वप्नों में क्या उलझता ही गया है।

(घ) कल मैंने कहा था कि वह दुनिया 10
जिसे ढकने के लिये तुम नंगे हो रहे थे
उसी दिन उधर गई थी
जिस दिन हर भाषा
तुम्हारे अँगूठा-निशान की स्याही में डूबकर
मर गई थी।

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

तुम अनपढ़ थे
गँवार थे
सीधे इतने कि बस
'दो और दो चार' थे।

अथवा

इस नदी की धार में ठण्डी हवा आती तो है, 10
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती है।
खण्डहर बचे हुये हैं, इमारत नहीं रही,
अच्छा हुआ कि सर पे कोई छत नहीं रही।

2. मैथिलीशरण गुप्त रचित 'साकेत' के नवम-सर्ग में चित्रित उर्मिला के विरह-व्यथा का सोदाहरण चित्रण कीजिये। 15

अथवा

"कामायनी महाकाव्य में श्रद्धा को प्रेरणादायी और उदात्त गुणों से सम्पन्न नारी-पात्र के रूप में चित्रित किया गया है।" इस कथन के आलोक में श्रद्धा का चरित्र चित्रण सोदाहरण कीजिए। 15

3. "पन्त की कविताओं में प्रकृति-सौन्दर्य के अत्यन्त सुन्दर चित्रण है।" इस कथन के प्रकाश में पंत की प्रकृति चित्रण की विशेषताएँ बताइये। 15

अथवा

मुक्तिबोध ने 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में मानवतावादी-समतावादी मूल्यों की प्रतिष्ठा की है। इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। 15

4. धूमिल के काव्य में समकालीन परिवेश की यथार्थता का अनेक स्तरों पर चित्रण हुआ है। इस कथन की समीक्षा कीजिये। 15

अथवा

दुष्यन्त कुमार की कविताओं में वर्णित काव्यगत सौन्दर्य का सोदाहरण चित्रण कीजिये। 15

5. 'छायावाद' की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिये। 15

अथवा

'प्रगतिवाद' काव्यधारा की प्रमुख विशेषताओं का चित्रण कीजिये। 15

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com